International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 18-04-2021, Accepted: 07-05-2021, Published: 24-05-2021
Volume 7, Issue 3, 2021, Page No. 41-47

कालिन्दी चरण पाणिग्रही के काव्य में प्रणय- चेतना: एक झलक

चिन्मयी मिश्र

शोध छात्रा, हिंदी विभाग, रेवेंशा विश्वविद्यालय, कटक, ओडिशा, भारत

सारांश

(उन्नीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक में ओडिशा में `सबुज साहित्य' बनने लगा । रेवेंशा कॉलेज में पढनेवाले कई छात्रों की हृदगत भावाभिव्यक्तियॉ ही इस साहित्य का मुख्य उपजीव्य रहा है । यदि इस साहित्य को 'तारुण्य की पुकार' हम कहे तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। उन छात्र-कवियों में एक प्रसिद्ध कवि थे कालिंदी चरण पाणिग्राही जिन्होंने प्रेम तथा प्रणय को युवाओ का अधिकार बताया। उनके अनुसार प्रेयसी दुनिया की सबसे कीमती सम्पदा है। प्रेम पल भर के लिए किया जा सकता है लेकिन उसका प्रभाव दीर्घस्थायी होता है । मनुष्य की आयु के साथ प्रेम के प्रभाव की अनोखी रिश्ता है। आयु जितनी - जितनी बढती रहती है प्रेम का प्रभाव उतना- उतना जबरदस्त बनता जाता है । सच कहा जाए तो प्रेम ही मुक्ति की साधना है । जो लोग प्रेम को गोपनीय तथा लज्जा का विषय मानते हैं वे भूल करते हैं। इसी प्रेम को पाने के लिए कवि कालिंदी चरण बार - बार जन्म लेने की तमन्ना रखते हैं । जिस संसार को लोग दुखमय मानते है वह संसार प्रणय की वजह से स्वर्ग में तबदील हो सकता है। कालिंदी चरण के काव्य में प्रणय - चेतना के मुख्य आधार निम्नलिखित हैं : 1. प्रेम लज्जा का विषय नहीं, वह युवाओं का अधिकार है। 2. प्रेम शाश्वत है । 3. प्रेयसी की हँसी में सारे धर्मो का निचोड निहित है । 4. प्रेमी एक दूसरे के परिपुरक तथा मुक्ति के पथप्रदशर्क भी हैं । 5. प्रेम से जीवन और मृत्यु आकर्षणीय बनती है ।)

मूल शब्द: आधुनिक, ओडिआ- काव्य, कालिंदी चरण, प्रणय- चेतना

प्रस्तावना

कालिन्दी चरण पाणिग्राही का जन्म ओडिशा के पूरी जिले के विश्वनाथपुर नामक एक गाव में हुआ था । अपने साहित्यिक – जीवन के प्रारम्भ में कालिंदी चरण जी रोमान्टिक कवि थे । क्रमश: उनकी कल्पना एवं भावना का स्थान बुद्धि तथा विवेक लेने लगे और वे आहिस्ते – आहिस्ते वास्तववादी, समाजवादी एवं गांधीवादी बन गये । इस प्रकार कवि के दृष्टिकोण के बदल जाने के मूल में ततकालीन ओडिशा की सामाजिक एव राजनैतिक परिस्थिति उतरदायी है । दृष्टिकोण बदल जाने के कारण उनका काव्य – लेखन धीमा पड गया और वे गद्य साहित्य में अधिक रुचि लेने लगे । अत: उनके कई मशहूर कहानी, उपन्यास, प्रबन्ध, नाटक आदि स्वरुप में आये । सन 1920 से सन 1932 तक वे रोमान्टिक कवि थे । सन 1932 के बाद वे वास्तववादी तथा मानवतावादी साहित्यकार बन गये । अत: कालिन्दी चरण के साहित्य – सृजन की हम दो धुरियॉ देखते हैं । काव्य में वे रोमांटिक हैं किंतु गद्य में वे वास्तववादी । अपने अध्ययन को हम केवल उनकी काव्य रचनाओं में सीमित रखना चाहते हैं एवं परख्नना

चाहते हैं कि उनके काव्य में निहित प्रणय – चेतना कितना महत्वपूर्ण है और तत्कालीन प्रणय – चेतना से वह किस प्रकार अलग है ?

कालिंदी चरण अपने पूर्वज ओडिआ साहित्य के प्रसिद्ध कवि राधानाथ राय के साहित्य से प्रभावित लगते हैं जिनकी प्रणय – चेतना परम्परा के खिलाफ जाती है । राधानाथ जी की नायिका प्रेम को साकार करने के लिए अपने पिता तक का विरुद्धाचरण करने को तेयार हो जाती है – 'सुतारे पितांक पूर्ण अधिकार, भणे जेउँ शास्त्र ताकु नमस्कार' (जो शास्त्र बताता है कि बेटी पर पिता का पूर्ण अधिकार है; उसे मैं नमस्कार करती हूँ।) राधानाथ जी के काव्य में प्रेमी परम्परा को तोडने के साथ – साथ बुजुर्गो से विद्रोह भी क्ररते हैं । लेकिन कालिंदी चरण के काव्य में बुजुर्गो के खिलाफ किसी प्रकार का विद्रोह नहीं है अपितु प्रेम को लेक्रर एक नवीन मानसिकता है। कवि सत्य, शिव, सुन्दर के रूप में प्रेम को देखता है और इसे पाने के लिए कठीन साधना करने को भी तैयार हो जाता है । उसे मुक्ति काम्य नहीं है परन्तु प्रेम काम्य है। अपनी प्रेयसी को पाने के लिए बार – बार धरती में जन्म लेना कवि चाहता है । अपनी प्रेयसी के साथ इसी उलझनों से भरे संसार में कवि रहना चाहते हैं । न वे पलायनवादी हैं; न वे समाज के अंदर अपसंस्कृति तथा अश्लीलता को फैलानेवाले हैं । कालिंदी चरण जी के काव्य में सौन्दयबोध, प्रेम, सुदुर के प्रति मोह, यौवन के प्रति मोह, अतीत के प्रति आसक्ति, प्रक्रुतिप्रेम, रहस्यवाद आदि रोमान्टिक काव्यानुभाव के अनेक तत्व मिलते हैं । उनकी जिन रचनाओ में रोमंटिक रूप अधिक स्प्ष्ट तथा मुख्रर लगते हैं वे हैं 'विरहीपक्ष्, रज, व्यर्थस्वप्न, कविरव्यथा, लोहितव्यथा, मानसी, रुपरमोह, शेषदान, मधुविवाह, छन्द नायिका, साधना'।

अध्ययन क्षेत्र

अब हम कालिंदी चरण के काव्य की प्रणय – चेतना की विशेषताओं पर चर्चा करेंगे जिनकी वजह से वे अपनी समकालीन तथा पूर्ववर्ती प्रणय – चेतना से एक अलग महत्व रखते हैं ।

1. प्रणय लज्जा का विषय नहीं है; वह युवाओं का अधिकार है

प्राचीन काल से प्रणय को शक की नजर से देख़ने की परम्परा चली आती है । यह अत्यन्त गोपनीय रूप से समाज में स्वीक्रृत होने की बात भी की जाती है । लेकिन कवि कालिंदी चरण इसे गोपनीय नहीं मानते है । यह प्रेमियों का अधिकार है । अत: प्रेम करना शर्म की बात नहीं है । प्रेमियों को प्रेम करने के कारण से किसी से डरने की जरूरत नहीं है:

'पीरति नामरे किपाइँ भय कह गो आज
से नुहँ कुहुक आकाशवाणी से नुहें लाज
युवक युवती ध्ररम सेत बयस दावी
गोपनीय तेबे कि अछि तहीं कह त भावि'[2]

(बताओ! प्रीति के नाम से आज भय कैसा है? वह आकशवाणी की कुहुक नहीं है या शर्म की वस्तु नहीं है । युवक – युवतियों की उम्र का वह अधिकार है तथा उनका धर्म भी इसी में है । सोच के बताओ उसमें छुपाने की क्या बात है ?)

2. प्रेम शाश्वत है

प्रेम की शाश्वतता को कवि स्वीकारते हैं । यह कभी फीका नहीं पडता है। इसकी मधुरता एवं शोभा में कभी कमी नहीं आती है । मृत्यु के बाद किसी न किसी रूप और वेश में कवि फिर से ध्ररती में जन्म लेते हैं । समय बदल जाता है ; आक्रृति भी बदल जाती है । लेकिन प्रेम में कोई फरक नहीं आत्ता है । कवि की आत्मा उसी पुराने प्यार की तलाश करती है । उसका प्यार जब तक नहीं मिल जाता तब तक कवि को उसकी खोज लगी रहती है । ऐसा करते हुए किसी प्रकार की क्लांती भी नही आती है ।

'लभिले क्षणे पीरति!
ए शोभा मोर मउले नाहिं
ए सुखे नाहिं क्लेश गो
युगे युगे ए नुहे पुरुणा

साजे मुँ जेउँ बेश गो ।'.[3]

(चाहे मैं कैसा वेश बदल दूँ । मेरे लिए पल भर की प्रीति की चमक कभी फीकी नहीं पडती है । इस सुख में क्लेश नहीं है । युगो से वह पुरानी भी नहीं बनती है।)
आयु के बढ्ने के साथ यौवन का आकर्षण दबने लगता है । संसार में कोई चिर नवीन या चिरन्तन नहीं है । चिर नवींनता एवं चिरन्तनता हम केवल ईश्वर में पाते है। लेकिन कालिंदी चरण की नजर से उसकी प्रेयसी का यौवन कभी फीका नहीं पडता है । वह चिरन्तन है । प्रेयसी का आकर्षण कवि को हमेशा रहता है । चाहे वह स्वदेश में रहे या विदेश में। किशोरावस्था में कवि उसका स्वप्न देखता था; बुढापे में वह हृदय की रानी बन जायेगी। उस प्रेयसी की कोमल बातों से उसकी सारी थकान मिट जाती है। जीवन में यदि किसी को कुछ सुख मिलता है तो वह केवल प्रेयसी की वजह से मिल सकता है । कवि जब निराश हो जाते हैं तब प्रेयसी ही उसके मन में आशा का संचार करती है। कवि को ऐहिक सुख देने के लिये वह अपना सब कुछ निछावर कर देती है। ऐसा क्ररते समय वह किसी प्रकार का न भय खाती है न शर्म करती है। कवि अपनी प्रेयसी को सर्वदा चिर नवीन – रूप से देखता है। अत: यहाँ प्रेयसी ईश्वर से कम नहीं लगती है:

' से प्रेयसी मोर चिर यौवन, नवीन से चिरन्तन
स्वदेशे विदेशे क्षणे क्षणे आसे, ता र शूभ निमन्त्रण।
कैशोरे मोर स्वपनर साथी, प्रौढे हृदयर राणी
जरा अंगे मोर ढालिब नवीन क्लान्तिहर ता बाणी।
मृत्यु अंके तेजि भय लज्या, पातिब मोर से चिर मधुशज्या
अंधारे से मोर कक्षे जालिब, पीरती प्रदीप आणि
कैशोर मोर स्वप्नर साथी, प्रौढे हृदयर राणी।[4]

(मेरी वह प्रेयसी का चिर यौवन है। उसका यौवन नवीन; चिरन्तन है। स्वदेश में हो या विदेश में पल- पल शुभ निमन्त्रण मुझे मिलता रहता है.- - - - - किशोरावस्था में वह मेरे स्वप्न की साथी है। पौढावस्था में हृदय की रानी है, बुढाप्पे में मेरे अंगो की क्लान्ति उसकी कोमल बातो से मिटेगी तथा मुझमें नवीनता लायेगी । अंधकार में वह मेरे कक्ष में प्रीति का दीपक जलायेगी।)
प्रणय की महत्ता का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि प्रेमी जितना – जितना बूढा बनता जाता है, उतना – उतना प्रेयसी और प्रणय का मोल उसके लिए बढता जाता है । प्रणय की आयु कम होती है परन्तु उसका प्रभाव चिरस्थायी होता है । प्रणय से ही जीवन के रेगिस्थान में अमृत की वर्षा होती है:

'अनाहूत अनुभूति क्षीण तार आयुष
जीवनर मरु- पथे ढालि दिए पीयुष
दिनुँ दिनुँ देह मन हुए जेते पुरूणा
मूल्य तार दिनुँ दिनुँ बढि उठे बहुत।'.[5]

(प्रण्य की अनुभूति अनाहूत आती है और उसकी आयु बहुत कम होती है। वह जीवन के मरूस्थल में अमृत की वर्षा करती है । मेरी उम्र जितनी ढलती जाती है, प्रणय के भाव मेरे अंदर उतनी अधिक मात्रा में बढते जाते है ।)
अत: प्रणय का प्रभाव कवि के जीवन में जबरदस्त होता है । उम्र ढलती है परन्तु प्रभाव बढता है । प्रेयसी को पाने के लिए कवि बार – बार इसी धरती में जन्म लेना चाहते हैं । प्रेयसी का चिर यौवन है और वह चिर नवीन भी है । कवि के लिए वह प्रेयसी ईश्वर से कम नहीं है । संसार में यदि कुछ सुख है तो वह प्रेयसी की वजह से ही मिल सकता है । प्रेम शाश्वत है। वह कभी भी फीका नहीं पडता है । कवि हर जन्म में अलग – अलग वेश पकडकर अपनी प्रेयसी से मिलने के लिए आते हैं । प्रेयसी से मिलन में ही उनका मोक्ष निहित है ।

3. प्रेयसी की हँसी में ही सारे धर्मो का निचोड निहित है

आश्वीन महीन के डूबते सूरज की मनमोहक सुंदरता को धारणकरनेवाले चेहेरे में चम्पक फूल की कमनीयता एवं सजीवता को मात देनेवाली प्रेयसी की हँसी का क्या कहना है ? जीवन में एक बार उस हँसी को झांक ले तो आँख और आत्मा निहाल हो जायेंगी। इन्हें न दूसरी भौतिक सुंदर चीज की चाहत रहेगी न ईश्वर की। प्रेयसी

की हँसी में कवि सारे धार्मिक ग्रन्थों के सार को एवं सारे धर्मो के परम अर्थों को देखते हैं । इसलिए तो वह हँसी कवि को इतना प्रिय है :

'षड दर्शन सकल ग्रन्थ
सबु धरमर परम अर्थ
अतीतर प्रिय केउँ शारदीय
गोधूलि अरूण परि
चम्पक चारू हास हसि जाउ
आगो गोरचना – गोरी।'[6]

(अरी गौर वर्ण की प्रेयसी ! शरत कालीन डूबता सूरज जैसे तुम्हारे बदन से चम्पक सी सुंदर हँसी निखरती रहे ! इसमें षड दर्शन, सारे धर्म – ग्रन्थों का सार निहित है ।)

संसारिक दु:ख को शिकस्त केवल प्रेयसी का प्रेम ही दे सकता है । प्रेयसी के साथ रहते हुए हर प्रकार का दु:ख, सुख का प्रतिकल्प बन जाता है । 'मधुविवाह' कालिंदी चरण जी की एक सार्थक प्रेम कविता है, जिसमें कवि की गहरी रोमान्टिक कल्पना साफ दिखती है । उनकी कल्पना में प्रेयसी यहॉ रूप नगर की रानी, स्नेह, ममता, प्रणय, प्रेम में अनन्या एवं यौवन की एक चिरन्तन निर्झरिणी है । यौवन से लेकर जरा तथा मृत्यु तक प्रेयसी उसकी सहधर्मिणी है । यहाँ कवि किसी सुदूर इलाके में जाकर अपनी प्रेयसी के साथ मशगुल रहना नहीं चाहते हैं, बल्कि इसी उलझनों से भरे संसार के अंदर प्रेयसी के प्रेम में कैद हो जाना पसन्द करते हैं । कालिंदी चरण के काव्य में विरह- मिलन, अश्रृ – आनन्दाश्रृ , पाना – खोना आदि दैत – सत्ता में सन्तुलन की रक्षा बखूबी हो सकी है । अनुभूति की गहराई ने उन्हें यौवन के उन्माद के प्रति आकर्षत किया है। इसलिये उनके स्वर में आनन्द और आशा का युगानुरुप आवेश स्प्ष्ट दिखता है । प्रेयसी के साथ दुनिया आनन्दमय लगती है । यहॉ किसी प्रकार का दु:ख – दर्द नहीं है । प्रेयसी के आने से पहले के दु:ख को भुला देना चाहिये । आँखों से आंसू को पोंछ देना चाहिये । अब तो केवल चांदनी की अनन्य छटा के माहोल में अपनी प्रेयसी के साथ हँसने तथा नाचने का समय है :

'आजि खालि हसिबार भुलिबार
जोछ्नारे नाच आजि बार बार
पोछि आस नयनरू लुह धार
विश्व होइछि उल्लसित जे।'[7]

(आज केवल हंसना है; दु:खों को भूल जाना है । चांदनी के माहौल में नाचते रहो । आँखों से आँसू की धारा को पोंछ लो। आज विश्व उल्लसित हो गया है ।)

यह है तारूण्य का आह्वान। सारे बन्धन तथा हर प्रकार की सामाजिक प्रथा, परम्परा से ऊपर उठक्रर एक नयी मुक्ति का संगीत उनकी 'फगुणबंशी' ने सुनाया है । 'कुहुप्रास' कविता में कवि कोयल के पंचम तान से उल्लसित तथा उद्दीप्त हो गये हैं । हर प्रकार की जागतिक वेदनाएँ एवं वाधाएँ उनके मन से दूर हो जाती हैं। सारे धर्मो से अनिवर्चनीय आनन्द तथा मोक्ष मिलते है । कवि को ये दोनों अपनी प्रेयसी से मिल जाते हैं । उन्हें इससे अधिक क्या चाहिए? प्रेयसी के साथ रहते समय उन्हें न आधिभौतिक दु:ख, न आधिदैविक दु:ख सता पाते हैं। उनका मन आनन्द से मोर सा नाचता है, गाता है। प्रेयसी की हँसी में उन्हें हर ध्रर्मो का निचोड मिलता है। अत: किसी धर्म की शरण में वे क्यों जायेंगें? उनका धर्म और ईश्वर उनकी प्रेयसी ही है ।

4. प्रेमी एक दूसरे के परिपुरक तथा मुक्ति के पथप्रदर्शक भी

कवि अपनी प्रेयसी को दुनियॉ का सबसे अनमोल धन मानते हैं। कवि के अंदर में वह मुक्ता के कण (सुंदर भावना) विखेरती है। अपनी मानसी की वेशभूषा में एवं हृदय की भावनाओं में सरलता झलकती भी है। उसे पाने की ललक कवि में दिन – पर – दिन बढ़ती जाती है। कहीं कवि की कपटता तथा मिथ्याचार प्रेयसी को बुरा न लगे और वह नाराज न हो जाए , इसलिए कवि सुधरने का भरसक प्रयत्न करते हैं। कवि की भावनाओं में रहने के कारण वह हमेशा कवि के इर्द- गिर्द घूमती रहती है। दुनिया में कवि को केवल उसकी प्रेयसी की चाहत है।

नारी के प्रेम को कोई माया के साथ जोडे या कल्पना, झूठ, भ्रम कहे । आत्मिक उन्नति के लिए उसे कोई रोडा माने । परंन्तु कवि ऐसा नहीं मानते हैं । कवि को न आत्मिक उन्नति चाहिए न भौतिक उन्नति। क्योकि कवि का हृदय जानता है कि उसकी प्रेयसी का मोल सारी भौतिक सम्पदाओं से एवं मोक्ष से भी अधिक है । कवि अपने को श्रीकृष्ण और अपनी प्रेयसी को राधिका मानते हैं जिसके साथ कविका जन्म – जन्मान्तर का सम्बन्ध है । उस राधिका से मिलन हो जायेगा तो कवि को जीवन का लाभ मिल सकता है :

'तुमे कुह ताकु मिछ कलपना केवल भ्रम
जीवने याहा मो एकइ अटे निकटतम
तुम यान मान अट्टालिकाठारू अधिक सत
सेहि से मानसी चिर आराधना राधिका मम।' [8]

(मेरे जीवन में जो सबसे करीबी है, तुम उसे झूठ- मूठ की कल्पना बोलते हो । तुम्हारे लिये भौतिक सम्पदायों की प्रतिष्ठा बडी हो सकती है लेकिन मेरे लिये मेरी प्रेयसी बडी है। वह मेरी चिर आराध्या, राधिका है।)

प्रणय का मन मोहक रूप उंनकी 'चक्रवाक' कविता से मिलता है । चक्रवाक दम्पति कोई किसी को पल भर के लिए छोड्ना नहीं चाहती है । रात आती है तो भावि विरह जनित दु:ख से कातर होक्रर दोनों रो पड्ते हैं । वे प्रणय में मोक्ष को देखते हैं। इस प्रकार की चाहत में किसी प्रकार का स्वार्थ जडित नहीं है। एक दूसरे की मुक्ति की साधना वे केवल करते हैं । वे जानते हैं कि एक के बिना दूसरे की मुक्ति असम्भव है:

'एहि चक्रबाक र दम्पति –
नाहिं तहिं स्वार्थ आशा दुइ लोढे दुइर मुकति।
युगल प्रयाणे
मुकतिर गति एक अपरकु जाणे।
एक बिने आनर मुकति
से ये महा असम्भब
क्लांतिहीन मिलन विभव' [9]

(इस चक्रवाक दम्पति की किसी प्रकार की स्वार्थ- आशा नहीं है । केवल एक दूसरे की मुक्ति की कामना करते हैं । दोनों के प्राण जानते हैं कि एक- दूसरे की मुक्ति की गति क्या है ? एक के बिना दूसरे की मुक्ति असम्भव है । उनकी मुक्ति उनके मिलन में ही निहित है जो उनके हर प्रकार की क्लांति को मिटा देती है ।)

अत: प्रेयसी के बिना कवि अधूरे हैं । प्रेयसी ही उन्हें सही रास्ता दिखाती है । कवि सुधरने की कोशिश करती हैं । वे दोनों एक दूसरे का परिपुरक हैं । एक के बिना दूसरे की मुक्ति असम्भव है ।

5. प्रेम से जीवन एवं मृत्यु आकर्षणीय लगते हैं

संसार से मुक्ति की कामना साधु - सन्त लोग रखते हैं क्योकि वे मानते हैं कि संसार दुखों से भरा हुआ है । पार्थिक जगत उन्हें अच्छा नहीं लगता है । जीवन दुर्विसह प्रतीत होता है । इसिलए जीवन से उन्हें छुटकारा चाहिए । उन्हें मोक्ष काम्य है । लेकिन प्रेमिक कालिंदी चरण का दर्शन कुछ उल्टा लगता है । वे प्रेयसी के साथ इसी संसार में रहना चाहते हैं । उनको जीवन प्रिय लगता है । इस धरती और आकाश की सारी कठीनता प्रेम की वजह से कोमल एवं कमनीय लगती हैं । यहाॅ तक कवि प्रेयसी के साथ मौत को भी खुशी – खुशी ग्रहण कर सकते हैं। अर्थात मौत की भीषणता भी यहाँ नहीं रही है । वह भी सुंदर लगने लगी है । उन्हें लगता है सब कुछ सुंदर है, सब कुछ श्लाघ्य है । कवि रूप में अरुप की, तनु में अतनु की सत्ता को महसूस करते हैं। जीवन में दर्द नहीं रहता है । विश्व संकुचित हो जाता है । मृत्यु भी मधुर लगती है:

'धरणी हेला कोमलतम आकाश कमनीय
मरण हेला मधुरतर जीवन हेला प्रिय।' [10]

(धरती कोमलतम बनी है, आकाश कमनीय बना हे। मृत्यु एवं जीवन दोनों प्रिय लगने लगे हैं ।)

सबुज काव्यशिल्पियों में कालिंदी चरण की स्वप्नप्रवणता, भावानुकूलता, एवं छन्द श्रृंखला अनन्य है । उनकी 'साधना' 'मुकुलिपडेगो', फगुणजोत्सना',

जैसी कविताएँ इसका उदाहरण है । इनमें सूक्ष्मसौन्दर्य चेतना, प्रेमानुभाव, अनुभूति की गहराई तथा भाषाविन्यास की सावलीलता बहुत ही सुंदर एवं सुलभ है। कवि प्रेयसी की दोनों काली ऑंखों की सुंदरता से इतना मोहित हो जाते हैं कि उन्हें लगता है ये आंखें नजर की आड में प्रीति की वर्षा कर रही हैं । उसकी ऑंख के कोने में यौवन की सुरा अपनी पूर्ण गरीमा के साथ तैर रही है जिसका आकण्ठ पान करने के लिए कवि का मन चाहता है :

‘से यउवन - सुरा झरू ए देह मने
उठु ता रंगिमा उकुटि आखिकोणे
जीवन – सुरा ढालु पीरति – रूपा साकी
दुइटि आखि खालि दुइटि कला आखि।[11]

(वह यौवन की शराब इस शरीर एवं मन को सिक्त करती रहे । उसकी लालिमा ऑंख के कोने में दिखाई देती रहे । अपनी दो काली- काली ऑंखों से प्रीति शराब को प्रेयसी जीवन भर पिलाती रहे ।)
प्रेयसी की अनन्य सुंदरता से कवि इतना मोहित हो गये हैं कि वे प्रेयसी को अपनी ऑंखों के सामने केवल देखना ही चाहते हैं । कवि को न धर्म काम्य है; न ईश्वर काम्य है; न मोक्ष काम्य है; उन्हें केवल ही केवल प्रेयसी काम्य है. खुशी- खुशी वे प्रेयसी के साथ इस संसार में स्वर्ग – सुख पा सकते है । यदि मौत भी आ जाए तो अपनी प्रेयसी के साथ हँसते हुए उसे भी स्वीकार कर सकते हैं ।

निष्कर्ष

1. प्रेम लज्जा का विषय नहीं है; वह युवाओं का अधिकार है ।
2. प्रेम शाश्वत है। उस प्रेम को पाने के लिए कवि बार-बार जन्म लेते हैं ।
3. कवि की प्रेयसी का चिर यौवन है। वह चिर नूतन भी है। अत: ईश्वर से कम नहीं है।
4. प्रेम का प्रभाव जबरद्स्त होता है ।
5. आधिभौतिक तथा आधिदैविक दुखों को शिक्स्त देने में प्रेम कारगर है ।
6. सारे धर्मो का निचोड प्रेम ही है। कवि के लिए प्रेयसी ईश्वर से कम नहीं है ।
7. कवि को मोक्ष नहीं चाहिए. प्रेयसी से प्रणय चाहिये ।
8. प्रणय की वजह से सांसारिक दुख स्वर्ग – दुख में तबदील हो जाता है । मृत्यु से भी डर नहीं लगता है ।
9. कवि के पूर्ववर्ती तथा समकालीन काव्य की प्रणय – चेतना में समाज एवं परम्परा के खिलाफ विरोध था । प्रेयसी के साथ किसी सुदूर इलाके को भाग जाने की कामना थी । नि:संकोच बुजुर्गो के खिलाफ जाने का भाव था । लेकिन कालिंदी चरण के काव्य में ऐसा कुछ नहीं है । पूरी शालीनता के साथ इस संसार में दूसरों के साथ मिलजुल कर रहते हुए प्रणय करने की इजाजत है । प्रणय के लिए पूर्ण समर्पण की भावना है । प्रणय की खातिर मरने – मिटने की अवधारणा है । यह एक उंची मानसिकता है । प्रेम तथा प्रणय में सत्य, शिव, सुंदर की झलक है ।

कालिंदी चरण के साहित्य– सृजन की प्रारम्भिक अवस्था के काव्य की प्रणय– चेतना किसी भी सहृदय के हृदय को विभोर कर देने में पूरी तरह से समर्थ है । कवि के लिए संसार में प्रणय ही सब कुछ है । यहाँ तक कि मोक्ष से बडा है । प्रेयसी का आकर्षण खींचने के लिए कवि सुधरते रहते हैं । प्रेयसी कवि के लिए जन्म-जन्मांतर की साथी है और प्रणय उनका अधिकार है । सामाजिकता के दायरे में प्रणय शोभा पाता है । इसमें अश्लीलता का आरोप न लगे, कवि इसके लिए पूरि तरह से सचेष्ट है । अपनी प्रेयसी के साथ इसी धूल- मिट्टी की संसार में रहते हुए इसे स्वर्ग बना देना चाहते हैं । कवि के लिए न उनकी प्रेयसी झूठ – मुट की परिकल्पना है न यह संसार माया की रचना है । प्रणय ही सारे सांसारिक सुख का केंद्र है जिसको पाने की कामना कवि को हर जन्म में रहती है ।

संदर्भ सूची

1. नन्दिकेश्वरी’– राय, राधनाथ, राधानाथ ग्रन्थाबली. विद्या प्रकाशन, कटक, 2015, पृ; 70
2. ‘प्राचीन’ – पाणिग्राही, कालिंदी चरण. कालिंदी

चरण कविता ओ नाट्क समग्र. बालूबजार, कट्क:स्टुडेंट्स् स्टोर, 1990, पृ0- 67

3. ‘तुमरि प्रेम’ – पाणिग्राही, कालिंदी चरण. कालिंदी चरण कविता ओ नाट्क समग्र. बालूबजार, कट्क:स्टुडेंट्स् स्टोर, 1990, पृ0- 232
4. ‘मधुविवाह’ – पाणिग्राही, कालिंदी चरण. कालिंदी चरण कविता ओ नाट्क समग्र. बालूबजार, कट्क:स्टुडेंट्स् स्टोर, 1990, पृ0- 279
5. ‘पथर प्रेमिक’ – पाणिग्राही, कालिंदी चरण. कालिंदी चरण कविता ओ नाट्क समग्र. बालूबजार, कट्क:स्टुडेंट्स् स्टोर, 1990, पृ0- 39
6. ‘रुपर स्तब’ – पाणिग्राही, कालिंदी चरण. कालिंदी चरण कविता ओ नाट्क समग्र. बालूबजार, कट्क:स्टुडेंट्स् स्टोर, 1990, पृ0- 36
7. ‘फगुण बंशी’ – पाणिग्राही, कालिंदी चरण. कालिंदी चरण कविता ओ नाट्क समग्र. बालूबजार, कट्क:स्टुडेंट्स् स्टोर, 1990, पृ0- 137
8. ‘मांनसी’ – पाणिग्राही, कालिंदी चरण. कालिंदी चरण कविता ओ नाट्क समग्र. बालूबजार, कट्क:स्टुडेंट्स् स्टोर, 1990, पृ0- 10
9. ‘चक्रवाक’ – पाणिग्राही, कालिंदी चरण. कालिंदी चरण कविता ओ नाट्क समग्र. बालूबजार, कट्क:स्टुडेंट्स् स्टोर, 1990, पृ0- 32
10. ‘कुहुप्रास’ – पाणिग्राही, कालिंदी चरण. कालिंदी चरण कविता ओ नाट्क समग्र. बालूबजार, कट्क:स्टुडेंट्स् स्टोर, 1990, पृ0- 100
11. ‘दुइटि कला आखि’ – पाणिग्राही, कालिंदी चरण. कालिंदी चरण कविता ओ नाट्क समग्र. बालूबजार, कट्क:स्टुडेंट्स् स्टोर, 1990, पृ0- 09